Experiences of Divinity by childhood friends Niranjan Jena & Kalindi Bhai :

1) How Sudarshan Baba, a sadhu approached Thakur ji's parents before his birth and told them about the incarnation of Prabhuji who will be born in their house. He later named him as **Keshav.**

2) How when he was in class three he started writing **CHARAM.**

3) How letters kept coming every month for one year written by Ram Das, Puri (disciple of Achyutananda !!) informing people about his divinity, signs on his body, names of his parents, surrounding religious places etc.

4) How Daam bhai and Kailash bhai roamed around for five years reading pothis of Achyutananda, which described the incarnation and found them all correct, which were later compiled & released in form of Mahurut Mahura

- जब ठाकुर जी अपनी मां के गर्भ में थे, एक साधु 'सुदर्शन बाबा' आ कर उनके माता पिता को उनके माध्यम से आने वाले अवतार के बारे में बता कर गए। वह जन्म के बाद आकर उनका नामकरण **'केशव'** कर गए।

- जब ठाकुर जी तीसरी कक्षा में थे, उन्होने **'चरम ग्रंथ'** लिखना शुरु कर दिया था।

- जब ठाकुर जी आठवीं कक्षा में थे, कैसे एक साल तक, हर मास राम दास 'पुरी', 'अच्युतानन्द के शिष्य' द्वारा लिखित खत गांव में आते थे और लोगों को ठाकुर जी के अवतारी पुरुष होने के प्रमाण स्वरुप; शरीर पर दिव्यत्व के चिन्ह, उनके माता पिता का नाम, आस पास स्थित पवित्र स्थानों की सूची आदि देते रहे! जिसे इनके साथियों ने सत्य पाया और दर्शन किए।

- कैसे दाम भाई और कैलाश भाई तथ्यों की सच्चाई परखने के लिए पांच वर्ष तक अच्युतानन्द की पोथियों का अध्ययन करते रहे, जिनमें अवतारी ब्रह्म का वर्णन था और उनहे सत्य पाया। बाद में उसे मुहूर्त महुरा के नाम से एक पुस्तक में लिपीबद्ध कर दिया।